ऋषि विश्वामित्र विद्या फाउंडेशन

(Rishi Vishwamitra Vidya Foundation)

🌿 अथर्ववेद का चिकित्सा विज्ञान: मूत्र रोगों का वैदिक समाधान 🌿

अथर्ववेद को आयुर्वेद और प्राचीन चिकित्सा विज्ञान का मूल स्रोत माना जाता है। आज हम अथर्ववेद के भेषज्य सूक्त के एक ऐसे मंत्र की चर्चा करेंगे, जो न केवल शारीरिक रोगों (विशेषकर मूत्रकृच्छ्र / Urinary Retention) के निवारण की बात करता है, बल्कि जड़ी-बूटियों और जल-तत्त्व के वैज्ञानिक संबंध को भी दर्शाता है।

॥ मूल मंत्र ॥

विद्मा शरस्य पितरं वरुणं शतवृष्ण्यम् ।
तेना ते तन्वे शं करं पृथिव्यां ते निषेचनं बहिष्टे अस्तु बालिति ॥३॥

॥ पदपाठ ॥

विद्म । शरस्य । पितरम् । वरुणम् । शतऽवृष्ण्यम् ।
तेन । ते । तन्वे । शम् । करम् । पृथिव्याम् । ते । निऽसेचनम् । बहिः । ते । अस्तु । बाल् । इति ॥३॥

📝 शब्दार्थ (Word Meaning)

- **विद्म (vidma):** हम जानते हैं।
- **शरस्य (sharasya):** शर (सरकंडा नामक औषधि) के।
- **पितरम् (pitaram):** पिता (उत्पादक या रक्षक) को।
- **वरुणम् (varuṇam):** वरुण देव (जल के देवता) को।
- **शतवृष्ण्यम् (shatavṛṣṇyam):** सौ गुना (असीम) शक्ति व वीर्य वाले।
- **तेन (tena):** उस (ज्ञान या वरुण के प्रभाव) से।
- **ते (te):** तुम्हारे।
- **तन्वे (tanve):** शरीर के लिए।
- **शम् करम् (sham karam):** मैं शांति/आरोग्य प्रदान करता हूँ।

- **पृथिव्याम् (pṛthivyām):** पृथ्वी पर।
- **निषेचनम् (niṣecanam):** स्राव (रुके हुए मूत्र का बहाव)।
- **बहिः (bahiḥ):** (शरीर से) बाहर।
- **अस्तु (astu):** होवे।
- **बालिति (bāl-iti):** 'बाल्' (छप-छप) की ध्वनि के साथ।

📖 सायणाचार्य जी का भाष्य

महान वैदिक भाष्यकार आचार्य सायण के अनुसार, यह मंत्र मूत्रकृच्छ्र (पेशाब के रुक जाने की बीमारी) से पीड़ित रोगी की चिकित्सा करते हुए वैद्य द्वारा बोला जाता है।

अर्थ: "हम इस 'शर' (मूत्र-प्रवाह में सहायक सरकंडा नामक औषधि) के उत्पादक और असीम शक्ति वाले जल-देवता 'वरुण' को भली-भांति जानते हैं। उस (वरुण देव और औषधि के ज्ञान) से मैं तेरे शरीर को रोगमुक्त करके शांति प्रदान करता हूँ। तेरा रुका हुआ मूत्र शरीर से बाहर, छप-छप ('बाल्') की आवाज़ के साथ पृथ्वी पर निर्बाध रूप से गिरे।"

📚 व्याकरण एवं व्युत्पत्ति

सायणाचार्य जी ने 'वरुण' शब्द की अत्यंत सुंदर व्याकरणिक और निरुक्त व्युत्पत्ति प्रस्तुत की है:

- **निरुक्त के अनुसार:** वरुण रात्र्यभिमानी (या जल के) देवता हैं। महर्षि यास्क के निरुक्त (१०.३) के अनुसार- "वरुणो वृणोतीति सतः" अर्थात् जो अपने अंधकार या पाशों से सम्पूर्ण प्राणिजगत को घेर लेता है (वृणोति), वह वरुण है।
- **व्याकरण (पाणिनीय सूत्र):**
  - 'वरुण' शब्द 'वृञ् वरणे' (घेरना/ढकना) धातु से बना है।
  - उणादि सूत्र 'कृतृवृदारिभ्य उनन्' (उणा. ३.५३) के नियम से 'वृञ्' धातु में 'उनन्' प्रत्यय लगने से 'वरुण' शब्द सिद्ध होता है।
  - स्वर प्रक्रिया में अष्टाध्यायी के सूत्र 'नित्यादिर्नित्यम्' (पा. ६.१.१९७) के नियम से इसके आदि स्वर (प्रारंभिक भाग) में उदात्त स्वर लगता है।

🔬 वैज्ञानिक दृष्टिकोण

यह मंत्र पूरी तरह से **Urology (मूत्र-विज्ञान)** और **Phytotherapy (वनस्पति चिकित्सा)** का प्राचीन रूप है:

- **औषधीय विज्ञान (Pharmacology):** मंत्र में 'शर' (Saccharum bengalense / मुंज) का उल्लेख है। आयुर्वेद में 'शर' और 'वरुण' (Crataeva nurvala) की छाल को सबसे बेहतरीन 'Diuretic' (मूत्रल) औषधियाँ माना गया है, जो गुर्दे की पथरी (Kidney stones) और मूत्र-मार्ग की रुकावट को दूर करती हैं।

- **जल तत्त्व का नियमन:** 'वरुण' शरीर में जल (Fluid and Electrolyte balance) और ऑस्मोटिक दबाव (Osmotic pressure) के नियंत्रक हैं। शरीर के 'वरुण' (Hydration system) को ठीक करके ही यूरिनरी ब्लॉकेज को खोला जा सकता है।
- **मनो-चिकित्सा (Psychological Suggestion):** मंत्र के अंत में प्रयुक्त "बालिति" (छप-छप की ध्वनि) शब्द 'Micturition Reflex' (पेशाब करने की इच्छा) को मनोवैज्ञानिक रूप से उद्दीप्त करता है। जैसे पानी बहने की आवाज़ सुनने से रुके हुए मूत्र का स्राव आसान हो जाता है, यह उसी ध्वनि-विज्ञान (Acoustic stimulation) का प्रयोग है।

📜 विनियोग एवं प्रमाण

इस मंत्र का विनियोग (Application) मुख्य रूप से मूत्रकृच्छ्र (Urinary retention) रोग को दूर करने के लिए भैषज्य कर्म (चिकित्सा) में किया जाता है।

प्रमाण (Proof): शौनक रचित 'कौशिक सूत्र' (२५.१०) में इस सूक्त का विनियोग स्पष्ट रूप से वर्णित है—

> "विद्मा शरस्येति सूक्तेन मूत्रकृच्छ्रे भेषजम्।"

अर्थात्, "विद्मा शरस्य..." इत्यादि सूक्त से अभिमंत्रित करके रोगी को जल या शर (सरकंडे) का काढ़ा पिलाना चाहिए। सायण भाष्य की भूमिका में भी स्पष्ट है कि इस मंत्र का पाठ करते हुए वैद्य रोगी की नाभि और बस्ति (Bladder) क्षेत्र पर औषधीय जल का छिड़काव करे, जिससे रुका हुआ मूत्र बाहर आ जाए।

निष्कर्ष: हमारे वेद केवल पूजा-पाठ के ग्रंथ नहीं हैं, बल्कि वे मानव शरीर, प्रकृति की औषधियों और मनोविज्ञान के अत्यंत गूढ़ वैज्ञानिक रहस्यों का भंडार हैं! 🙏

प्रस्तुति

आचार्य कपिल

ऋषि विश्वामित्र विद्या फाउंडेशन

सम्पर्क सूत्र: **8756390767**